आत्म तत्व विचार

हर्ष की बात है कि, परम पूज्य महासतीजी श्री तरुलताबाई स्वामी ने सम्वत् २०४१ के चातुर्मास के दौरान मद्रास में व्याख्यान के लिए कृपालु देव श्रीमद् राजचन्द्र के ''आत्म सिद्धि शास्त्र'' ग्रंथ को पसन्द किया।

एक स्थल से अन्य स्थल तक विहार करने वाले जैन साधु-साध्वियाँ चातुर्मास के चार महीनों के दौरान किसी भी एक स्थल पर स्थिर रहते हैं। चातुर्मास में रोज सुबह उनका नियमित व्याख्यान होता है। नित नये-नये विषयों का पुनरावर्तन न हो, इस प्राकर प्रस्तुत करने की व्याख्यान कला सरल नीह है। व्याख्यान के विषयों के आधार के तौर पर एक या दो ग्रंथों को पसंद किया जाता है। उत्तराध्ययन सूत्र, दशवैकालिक, ज्ञाता धर्मकथा, कल्प सूत्र, योग दृष्टि समच्चय, समरादित्य कथा, योग शास्त्र, ज्ञानासार वगैरह अने विभिन्न ग्रंथों से अपनी रुचि एवं शक्ति के अनुसार, किसी भी ग्रंथ की पसंदगी होती है। ग्रंथ जितना छोटा उतना ही व्याख्यान में उसका विस्तार करने की शक्ति एवं कला का होना विशेष आवश्यक है।

प.पू. तरूलताबाई महासतीजी ने १४२ दोही की एक छोटी कृति ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पसंद की। यह हमें उनकी व्याख्यान की शक्ति एवं प्रस्तुति कला की स्पष्ट प्रतीति कराता है। ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पर व्याख्यान देना सरल बात नहीं है। अध्यात्म का रहस्य प्रकट करते हुए श्रोताओं को विषय की गहराई में, ले जाने का कार्य सरल नहीं हैं। परन्तु सूक्ष्म अर्थ विवेचन करने के लिए विशाल वांचन, गहन अध्ययन, गहन चिंतन एवं आध्यात्मिक अनुभूति की आवश्यकता है। प.पू. स्व. तत्वानंद विजयजी महाराज चातुर्मास के व्याख्यानों के लिए कभी-कभी केवल नवकार मंत्र ही पसंद करते एवं चार महीने नवकार मंत्र के नौ पदों पर रोज नयी-नयी दृष्टि से नया-नया अर्थ विस्तृत करते। वे श्रोताओं में प्रमाद न आये इस तरह रोजक शैली द्वारा ऐसा सरस प्रस्तुतिकरण करते कि उन्हें सुनने के लिए काफी लोग एकत्रित हो जाते।

प.पू. तरुलताबाई महासतीजी ने बम्बई युनिवर्सिटी से पीएच.डी. की पदवी प्राप्त की। इसके लिए उन्होंने अध्ययन के विषय के रूप में राजचन्द्र, आनन्दधनजी, बनारसी दास, एवं संत कबीर जैसे महान तत्ववेत्ताओं को पसन्द किया। इससे उनकी रुचि का क्षेत्र आध्यात्मिकता की कैसी ऊँची भूमिका पर रहा है, वह समझ में आ ाता है। इन चारों महात्माओं ने सम्प्रदाय एवं गच्छ कि परिधि से बाहर निकल कर शुद्ध परम तत्व की उपासना की थी। उनकी आध्यात्मिक अनुभूति उच्च कोटि की थी। उनका साहित्य गहन, मार्मिक एवं रसयुक्त है। प.पू. तरुलताबाई महासतीजी ने श्रीमद्राजचन्द्र के साहित्य का सधन अध्ययन किया है। इसलिए ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पर व्याख्यान देने के लिए वे सर्वथाविशेष अधिकारिणी हैं।

श्रीमद् राजचन्द्रजी ने १९ वर्ष का अल्प आयु में ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' नामक मात्र १४२ गाथा की कृति की रचना की। विक्रम सम्वत १९५२ में आसोवद एकम की शाम, नडियाद में उन्होंने केवल डेढ़ दो घन्टे के अल्प समय में इसकी रचना की जो सिद्ध करता है कि उनकी विचार धारा कितनी स्पष्ट थी एवं शब्दों पर उनका प्रभुत्व कैसा असाधारण एवं अद्वितीय था। जहाँ जो शब्द चाहिए, वहाँ वह शब्द रखा। ऐसी असाधारण कवि प्रतिभा उनके पास थी। यह कृति इतनी सुरेख एवं संश्लिष्ट है कि, इतने वर्षों के बाद भी ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' शास्त्र का एक शब्द भी इधर-उधर करने का दिल नहीं होता।

श्रीमद्जीने आत्म सिद्धि शास्त्र में शुद्ध आत्मतत्व पर विशद् विचार किया है। श्रीमद् लिखते हैं —

आत्मा छे, ते नित्य छे, छे कर्ता निज कर्म;
छे भोक्ता वळी मोक्ष छे, मोक्ष उपाय सुधर्म।

श्रीमद् ने सरल वाणी द्वारा ऐसा सुन्दर प्रकाश प्रकाशित किया है कि, आत्मा के इन छः पदों पर भव्य जीवों को सद्बोध हो जाये। जिन्होंने आत्मार्थी एवं मतार्थी के लक्षणों को स्पष्ट किया है और आत्मार्थी

आत्म तत्व विचार

हर्ष की बात है कि, परम पूज्य महासतीजी श्री तरुलताबाई स्वामी ने सम्वत् २०४१ के चातुर्मास के दौरान मद्रास में व्याख्यान के लिए कृपालु देव श्रीमद् राजचन्द्र के ''आत्म सिद्धि शास्त्र'' ग्रंथ को पसन्द किया।

एक स्थल से अन्य स्थल तक विहार करने वाले जैन साधु-साध्वियाँ चातुर्मास के चार महीनों के दौरान किसी भी एक स्थल पर स्थिर रहते हैं। चातुर्मास में रोज सुबह उनका नियमित व्याख्यान होता है। नित नये-नये विषयों का पुनरावर्तन न हो, इस प्राकर प्रस्तुत करने की व्याख्यान कला सरल नीह है। व्याख्यान के विषयों के आधार के तौर पर एक या दो ग्रंथों को पसंद किया जाता है। उत्तराध्ययन सूत्र, दशवैकालिक, ज्ञाता धर्मकथा, कल्प सूत्र, योग दृष्टि समच्चय, समरादित्य कथा, योग शास्त्र, ज्ञानासार वगैरह अने विभिन्न ग्रंथों से अपनी रुचि एवं शक्ति के अनुसार, किसी भी ग्रंथ की पसंदगी होती है। ग्रंथ जितना छोटा उतना ही व्याख्यान में उसका विस्तार करने की शक्ति एवं कला का होना विशेष आवश्यक है।

प.पू. तरूलताबाई महासतीजी ने १४२ दोही की एक छोटी कृति ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पसंद की। यह हमें उनकी व्याख्यान की शक्ति एवं प्रस्तुति कला की स्पष्ट प्रतीति कराता है। ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पर व्याख्यान देना सरल बात नहीं है। अध्यात्म का रहस्य प्रकट करते हुए श्रोताओं को विषय की गहराई में, ले जाने का कार्य सरल नहीं हैं। परन्तु सूक्ष्म अर्थ विवेचन करने के लिए विशाल वांचन, गहन अध्ययन, गहन चिंतन एवं आध्यात्मिक अनुभूति की आवश्यकता है। प.पू. स्व. तत्वानंद विजयजी महाराज चातुर्मास के व्याख्यानों के लिए कभी-कभी केवल नवकार मंत्र ही पसंद करते एवं चार महीने नवकार मंत्र के नौ पदों पर रोज नयी-नयी दृष्टि से नया-नया अर्थ विस्तृत करते। वे श्रोताओं में प्रमाद न आये इस तरह रोजक शैली द्वारा ऐसा सरस प्रस्तुतिकरण करते कि उन्हें सुनने के लिए काफी लोग एकत्रित हो जाते।

प.पू. तरुलताबाई महासतीजी ने बम्बई युनिवर्सिटी से पीएच.डी. की पदवी प्राप्त की। इसके लिए उन्होंने अध्ययन के विषय के रूप में राजचन्द्र, आनन्दधनजी, बनारसी दास, एवं संत कबीर जैसे महान तत्ववेत्ताओं को पसन्द किया। इससे उनकी रुचि का क्षेत्र आध्यात्मिकता की कैसी ऊँची भूमिका पर रहा है, वह समझ में आ ाता है। इन चारों महात्माओं ने सम्प्रदाय एवं गच्छ कि परिधि से बाहर निकल कर शुद्ध परम तत्व की उपासना की थी। उनकी आध्यात्मिक अनुभूति उच्च कोटि की थी। उनका साहित्य गहन, मार्मिक एवं रसयुक्त है। प.पू. तरुलताबाई महासतीजी ने श्रीमद्राजचन्द्र के साहित्य का सधन अध्ययन किया है। इसलिए ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पर व्याख्यान देने के लिए वे सर्वथाविशेष अधिकारिणी हैं।

श्रीमद् राजचन्द्रजी ने १९ वर्ष का अल्प आयु में ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' नामक मात्र १४२ गाथा की कृति की रचना की। विक्रम सम्वत १९५२ में आसोवद एकम की शाम, नडियाद में उन्होंने केवल डेढ़ दो घन्टे के अल्प समय में इसकी रचना की जो सिद्ध करता है कि उनकी विचार धारा कितनी स्पष्ट थी एवं शब्दों पर उनका प्रभुत्व कैसा असाधारण एवं अद्वितीय था। जहाँ जो शब्द चाहिए, वहाँ वह शब्द रखा। ऐसी असाधारण कवि प्रतिभा उनके पास थी। यह कृति इतनी सुरेख एवं संश्लिष्ट है कि, इतने वर्षों के बाद भी ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' शास्त्र का एक शब्द भी इधर-उधर करने का दिल नहीं होता।

श्रीमद्जीने आत्म सिद्धि शास्त्र में शुद्ध आत्मतत्व पर विशद् विचार किया है। श्रीमद् लिखते हैं —

आत्मा छे, ते नित्य छे, छे कर्ता निज कर्म;
छे भोक्ता वळी मोक्ष छे, मोक्ष उपाय सुधर्म।

श्रीमद् ने सरल वाणी द्वारा ऐसा सुन्दर प्रकाश प्रकाशित किया है कि, आत्मा के इन छः पदों पर भव्य जीवों को सद्बोध हो जाये। जिन्होंने आत्मार्थी एवं मतार्थी के लक्षणों को स्पष्ट किया है और आत्मार्थी

आत्म तत्व विचार

हर्ष की बात है कि, परम पूज्य महासतीजी श्री तरुलताबाई स्वामी ने सम्वत् २०४१ के चातुर्मास के दौरान मद्रास में व्याख्यान के लिए कृपालु देव श्रीमद् राजचन्द्र के ''आत्म सिद्धि शास्त्र'' ग्रंथ को पसन्द किया।

एक स्थल से अन्य स्थल तक विहार करने वाले जैन साधु-साध्वियाँ चातुर्मास के चार महीनों के दौरान किसी भी एक स्थल पर स्थिर रहते हैं। चातुर्मास में रोज सुबह उनका नियमित व्याख्यान होता है। नित नये-नये विषयों का पुनरावर्तन न हो, इस प्राकर प्रस्तुत करने की व्याख्यान कला सरल नीह है। व्याख्यान के विषयों के आधार के तौर पर एक या दो ग्रंथों को पसंद किया जाता है। उत्तराध्ययन सूत्र, दशवैकालिक, ज्ञाता धर्मकथा, कल्प सूत्र, योग दृष्टि समच्चय, समरादित्य कथा, योग शास्त्र, ज्ञानासार वगैरह अने विभिन्न ग्रंथों से अपनी रुचि एवं शक्ति के अनुसार, किसी भी ग्रंथ की पसंदगी होती है। ग्रंथ जितना छोटा उतना ही व्याख्यान में उसका विस्तार करने की शक्ति एवं कला का होना विशेष आवश्यक है।

प.पू. तरूलताबाई महासतीजी ने १४२ दोही की एक छोटी कृति ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पसंद की। यह हमें उनकी व्याख्यान की शक्ति एवं प्रस्तुति कला की स्पष्ट प्रतीति कराता है। ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पर व्याख्यान देना सरल बात नहीं है। अध्यात्म का रहस्य प्रकट करते हुए श्रोताओं को विषय की गहराई में, ले जाने का कार्य सरल नहीं हैं। परन्तु सूक्ष्म अर्थ विवेचन करने के लिए विशाल वांचन, गहन अध्ययन, गहन चिंतन एवं आध्यात्मिक अनुभूति की आवश्यकता है। प.पू. स्व. तत्वानंद विजयजी महाराज चातुर्मास के व्याख्यानों के लिए कभी-कभी केवल नवकार मंत्र ही पसंद करते एवं चार महीने नवकार मंत्र के नौ पदों पर रोज नयी-नयी दृष्टि से नया-नया अर्थ विस्तृत करते। वे श्रोताओं में प्रमाद न आये इस तरह रोजक शैली द्वारा ऐसा सरस प्रस्तुतिकरण करते कि उन्हें सुनने के लिए काफी लोग एकत्रित हो जाते।

प.पू. तरुलताबाई महासतीजी ने बम्बई युनिवर्सिटी से पीएच.डी. की पदवी प्राप्त की। इसके लिए उन्होंने अध्ययन के विषय के रूप में राजचन्द्र, आनन्दधनजी, बनारसी दास, एवं संत कबीर जैसे महान तत्ववेत्ताओं को पसन्द किया। इससे उनकी रुचि का क्षेत्र आध्यात्मिकता की कैसी ऊँची भूमिका पर रहा है, वह समझ में आ ाता है। इन चारों महात्माओं ने सम्प्रदाय एवं गच्छ कि परिधि से बाहर निकल कर शुद्ध परम तत्व की उपासना की थी। उनकी आध्यात्मिक अनुभूति उच्च कोटि की थी। उनका साहित्य गहन, मार्मिक एवं रसयुक्त है। प.पू. तरुलताबाई महासतीजी ने श्रीमद्राजचन्द्र के साहित्य का सधन अध्ययन किया है। इसलिए ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पर व्याख्यान देने के लिए वे सर्वथाविशेष अधिकारिणी हैं।

श्रीमद् राजचन्द्रजी ने १९ वर्ष का अल्प आयु में ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' नामक मात्र १४२ गाथा की कृति की रचना की। विक्रम सम्वत १९५२ में आसोवद एकम की शाम, नडियाद में उन्होंने केवल डेढ़ दो घन्टे के अल्प समय में इसकी रचना की जो सिद्ध करता है कि उनकी विचार धारा कितनी स्पष्ट थी एवं शब्दों पर उनका प्रभुत्व कैसा असाधारण एवं अद्वितीय था। जहाँ जो शब्द चाहिए, वहाँ वह शब्द रखा। ऐसी असाधारण कवि प्रतिभा उनके पास थी। यह कृति इतनी सुरेख एवं संश्लिष्ट है कि, इतने वर्षों के बाद भी ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' शास्त्र का एक शब्द भी इधर-उधर करने का दिल नहीं होता।

श्रीमद्जीने आत्म सिद्धि शास्त्र में शुद्ध आत्मतत्व पर विशद् विचार किया है। श्रीमद् लिखते हैं —

आत्मा छे, ते नित्य छे, छे कर्ता निज कर्म;
छे भोक्ता वळी मोक्ष छे, मोक्ष उपाय सुधर्म।

श्रीमद् ने सरल वाणी द्वारा ऐसा सुन्दर प्रकाश प्रकाशित किया है कि, आत्मा के इन छः पदों पर भव्य जीवों को सद्बोध हो जाये। जिन्होंने आत्मार्थी एवं मतार्थी के लक्षणों को स्पष्ट किया है और आत्मार्थी

आत्म तत्व विचार

हर्ष की बात है कि, परम पूज्य महासतीजी श्री तरुलताबाई स्वामी ने सम्वत् २०४१ के चातुर्मास के दौरान मद्रास में व्याख्यान के लिए कृपालु देव श्रीमद् राजचन्द्र के ''आत्म सिद्धि शास्त्र'' ग्रंथ को पसन्द किया।

एक स्थल से अन्य स्थल तक विहार करने वाले जैन साधु-साध्वियाँ चातुर्मास के चार महीनों के दौरान किसी भी एक स्थल पर स्थिर रहते हैं। चातुर्मास में रोज सुबह उनका नियमित व्याख्यान होता है। नित नये-नये विषयों का पुनरावर्तन न हो, इस प्राकर प्रस्तुत करने की व्याख्यान कला सरल नीह है। व्याख्यान के विषयों के आधार के तौर पर एक या दो ग्रंथों को पसंद किया जाता है। उत्तराध्ययन सूत्र, दशवैकालिक, ज्ञाता धर्मकथा, कल्प सूत्र, योग दृष्टि समच्चय, समरादित्य कथा, योग शास्त्र, ज्ञानासार वगैरह अने विभिन्न ग्रंथों से अपनी रुचि एवं शक्ति के अनुसार, किसी भी ग्रंथ की पसंदगी होती है। ग्रंथ जितना छोटा उतना ही व्याख्यान में उसका विस्तार करने की शक्ति एवं कला का होना विशेष आवश्यक है।

प.पू. तरूलताबाई महासतीजी ने १४२ दोही की एक छोटी कृति ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पसंद की। यह हमें उनकी व्याख्यान की शक्ति एवं प्रस्तुति कला की स्पष्ट प्रतीति कराता है। ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पर व्याख्यान देना सरल बात नहीं है। अध्यात्म का रहस्य प्रकट करते हुए श्रोताओं को विषय की गहराई में, ले जाने का कार्य सरल नहीं हैं। परन्तु सूक्ष्म अर्थ विवेचन करने के लिए विशाल वांचन, गहन अध्ययन, गहन चिंतन एवं आध्यात्मिक अनुभूति की आवश्यकता है। प.पू. स्व. तत्वानंद विजयजी महाराज चातुर्मास के व्याख्यानों के लिए कभी-कभी केवल नवकार मंत्र ही पसंद करते एवं चार महीने नवकार मंत्र के नौ पदों पर रोज नयी-नयी दृष्टि से नया-नया अर्थ विस्तृत करते। वे श्रोताओं में प्रमाद न आये इस तरह रोजक शैली द्वारा ऐसा सरस प्रस्तुतिकरण करते कि उन्हें सुनने के लिए काफी लोग एकत्रित हो जाते।

प.पू. तरुलताबाई महासतीजी ने बम्बई युनिवर्सिटी से पीएच.डी. की पदवी प्राप्त की। इसके लिए उन्होंने अध्ययन के विषय के रूप में राजचन्द्र, आनन्दधनजी, बनारसी दास, एवं संत कबीर जैसे महान तत्ववेत्ताओं को पसन्द किया। इससे उनकी रुचि का क्षेत्र आध्यात्मिकता की कैसी ऊँची भूमिका पर रहा है, वह समझ में आ ाता है। इन चारों महात्माओं ने सम्प्रदाय एवं गच्छ कि परिधि से बाहर निकल कर शुद्ध परम तत्व की उपासना की थी। उनकी आध्यात्मिक अनुभूति उच्च कोटि की थी। उनका साहित्य गहन, मार्मिक एवं रसयुक्त है। प.पू. तरुलताबाई महासतीजी ने श्रीमद्राजचन्द्र के साहित्य का सधन अध्ययन किया है। इसलिए ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पर व्याख्यान देने के लिए वे सर्वथाविशेष अधिकारिणी हैं।

श्रीमद् राजचन्द्रजी ने १९ वर्ष का अल्प आयु में ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' नामक मात्र १४२ गाथा की कृति की रचना की। विक्रम सम्वत १९५२ में आसोवद एकम की शाम, नडियाद में उन्होंने केवल डेढ़ दो घन्टे के अल्प समय में इसकी रचना की जो सिद्ध करता है कि उनकी विचार धारा कितनी स्पष्ट थी एवं शब्दों पर उनका प्रभुत्व कैसा असाधारण एवं अद्वितीय था। जहाँ जो शब्द चाहिए, वहाँ वह शब्द रखा। ऐसी असाधारण कवि प्रतिभा उनके पास थी। यह कृति इतनी सुरेख एवं संश्लिष्ट है कि, इतने वर्षों के बाद भी ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' शास्त्र का एक शब्द भी इधर-उधर करने का दिल नहीं होता।

श्रीमद्जीने आत्म सिद्धि शास्त्र में शुद्ध आत्मतत्व पर विशद् विचार किया है। श्रीमद् लिखते हैं —

आत्मा छे, ते नित्य छे, छे कर्ता निज कर्म;
छे भोक्ता वळी मोक्ष छे, मोक्ष उपाय सुधर्म।

श्रीमद् ने सरल वाणी द्वारा ऐसा सुन्दर प्रकाश प्रकाशित किया है कि, आत्मा के इन छः पदों पर भव्य जीवों को सद्बोध हो जाये। जिन्होंने आत्मार्थी एवं मतार्थी के लक्षणों को स्पष्ट किया है और आत्मार्थी

आत्म तत्व विचार

हर्ष की बात है कि, परम पूज्य महासतीजी श्री तरुलताबाई स्वामी ने सम्वत् २०४१ के चातुर्मास के दौरान मद्रास में व्याख्यान के लिए कृपालु देव श्रीमद् राजचन्द्र के ''आत्म सिद्धि शास्त्र'' ग्रंथ को पसन्द किया।

एक स्थल से अन्य स्थल तक विहार करने वाले जैन साधु-साध्वियाँ चातुर्मास के चार महीनों के दौरान किसी भी एक स्थल पर स्थिर रहते हैं। चातुर्मास में रोज सुबह उनका नियमित व्याख्यान होता है। नित नये-नये विषयों का पुनरावर्तन न हो, इस प्राकर प्रस्तुत करने की व्याख्यान कला सरल नीह है। व्याख्यान के विषयों के आधार के तौर पर एक या दो ग्रंथों को पसंद किया जाता है। उत्तराध्ययन सूत्र, दशवैकालिक, ज्ञाता धर्मकथा, कल्प सूत्र, योग दृष्टि समच्चय, समरादित्य कथा, योग शास्त्र, ज्ञानासार वगैरह अने विभिन्न ग्रंथों से अपनी रुचि एवं शक्ति के अनुसार, किसी भी ग्रंथ की पसंदगी होती है। ग्रंथ जितना छोटा उतना ही व्याख्यान में उसका विस्तार करने की शक्ति एवं कला का होना विशेष आवश्यक है।

प.पू. तरूलताबाई महासतीजी ने १४२ दोही की एक छोटी कृति ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पसंद की। यह हमें उनकी व्याख्यान की शक्ति एवं प्रस्तुति कला की स्पष्ट प्रतीति कराता है। ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पर व्याख्यान देना सरल बात नहीं है। अध्यात्म का रहस्य प्रकट करते हुए श्रोताओं को विषय की गहराई में, ले जाने का कार्य सरल नहीं हैं। परन्तु सूक्ष्म अर्थ विवेचन करने के लिए विशाल वांचन, गहन अध्ययन, गहन चिंतन एवं आध्यात्मिक अनुभूति की आवश्यकता है। प.पू. स्व. तत्वानंद विजयजी महाराज चातुर्मास के व्याख्यानों के लिए कभी-कभी केवल नवकार मंत्र ही पसंद करते एवं चार महीने नवकार मंत्र के नौ पदों पर रोज नयी-नयी दृष्टि से नया-नया अर्थ विस्तृत करते। वे श्रोताओं में प्रमाद न आये इस तरह रोजक शैली द्वारा ऐसा सरस प्रस्तुतिकरण करते कि उन्हें सुनने के लिए काफी लोग एकत्रित हो जाते।

प.पू. तरुलताबाई महासतीजी ने बम्बई युनिवर्सिटी से पीएच.डी. की पदवी प्राप्त की। इसके लिए उन्होंने अध्ययन के विषय के रूप में राजचन्द्र, आनन्दधनजी, बनारसी दास, एवं संत कबीर जैसे महान तत्ववेत्ताओं को पसन्द किया। इससे उनकी रुचि का क्षेत्र आध्यात्मिकता की कैसी ऊँची भूमिका पर रहा है, वह समझ में आ ाता है। इन चारों महात्माओं ने सम्प्रदाय एवं गच्छ कि परिधि से बाहर निकल कर शुद्ध परम तत्व की उपासना की थी। उनकी आध्यात्मिक अनुभूति उच्च कोटि की थी। उनका साहित्य गहन, मार्मिक एवं रसयुक्त है। प.पू. तरुलताबाई महासतीजी ने श्रीमद्राजचन्द्र के साहित्य का सधन अध्ययन किया है। इसलिए ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पर व्याख्यान देने के लिए वे सर्वथाविशेष अधिकारिणी हैं।

श्रीमद् राजचन्द्रजी ने १९ वर्ष का अल्प आयु में ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' नामक मात्र १४२ गाथा की कृति की रचना की। विक्रम सम्वत १९५२ में आसोवद एकम की शाम, नडियाद में उन्होंने केवल डेढ़ दो घन्टे के अल्प समय में इसकी रचना की जो सिद्ध करता है कि उनकी विचार धारा कितनी स्पष्ट थी एवं शब्दों पर उनका प्रभुत्व कैसा असाधारण एवं अद्वितीय था। जहाँ जो शब्द चाहिए, वहाँ वह शब्द रखा। ऐसी असाधारण कवि प्रतिभा उनके पास थी। यह कृति इतनी सुरेख एवं संश्लिष्ट है कि, इतने वर्षों के बाद भी ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' शास्त्र का एक शब्द भी इधर-उधर करने का दिल नहीं होता।

श्रीमद्जीने आत्म सिद्धि शास्त्र में शुद्ध आत्मतत्व पर विशद् विचार किया है। श्रीमद् लिखते हैं —

आत्मा छे, ते नित्य छे, छे कर्ता निज कर्म;
छे भोक्ता वळी मोक्ष छे, मोक्ष उपाय सुधर्म।

श्रीमद् ने सरल वाणी द्वारा ऐसा सुन्दर प्रकाश प्रकाशित किया है कि, आत्मा के इन छः पदों पर भव्य जीवों को सद्बोध हो जाये। जिन्होंने आत्मार्थी एवं मतार्थी के लक्षणों को स्पष्ट किया है और आत्मार्थी

आत्म तत्व विचार

हर्ष की बात है कि, परम पूज्य महासतीजी श्री तरुलताबाई स्वामी ने सम्वत् २०४१ के चातुर्मास के दौरान मद्रास में व्याख्यान के लिए कृपालु देव श्रीमद् राजचन्द्र के ''आत्म सिद्धि शास्त्र'' ग्रंथ को पसन्द किया।

एक स्थल से अन्य स्थल तक विहार करने वाले जैन साधु-साध्वियाँ चातुर्मास के चार महीनों के दौरान किसी भी एक स्थल पर स्थिर रहते हैं। चातुर्मास में रोज सुबह उनका नियमित व्याख्यान होता है। नित नये-नये विषयों का पुनरावर्तन न हो, इस प्राकर प्रस्तुत करने की व्याख्यान कला सरल नीह है। व्याख्यान के विषयों के आधार के तौर पर एक या दो ग्रंथों को पसंद किया जाता है। उत्तराध्ययन सूत्र, दशवैकालिक, ज्ञाता धर्मकथा, कल्प सूत्र, योग दृष्टि समच्चय, समरादित्य कथा, योग शास्त्र, ज्ञानासार वगैरह अने विभिन्न ग्रंथों से अपनी रुचि एवं शक्ति के अनुसार, किसी भी ग्रंथ की पसंदगी होती है। ग्रंथ जितना छोटा उतना ही व्याख्यान में उसका विस्तार करने की शक्ति एवं कला का होना विशेष आवश्यक है।

प.पू. तरूलताबाई महासतीजी ने १४२ दोही की एक छोटी कृति ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पसंद की। यह हमें उनकी व्याख्यान की शक्ति एवं प्रस्तुति कला की स्पष्ट प्रतीति कराता है। ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पर व्याख्यान देना सरल बात नहीं है। अध्यात्म का रहस्य प्रकट करते हुए श्रोताओं को विषय की गहराई में, ले जाने का कार्य सरल नहीं हैं। परन्तु सूक्ष्म अर्थ विवेचन करने के लिए विशाल वांचन, गहन अध्ययन, गहन चिंतन एवं आध्यात्मिक अनुभूति की आवश्यकता है। प.पू. स्व. तत्वानंद विजयजी महाराज चातुर्मास के व्याख्यानों के लिए कभी-कभी केवल नवकार मंत्र ही पसंद करते एवं चार महीने नवकार मंत्र के नौ पदों पर रोज नयी-नयी दृष्टि से नया-नया अर्थ विस्तृत करते। वे श्रोताओं में प्रमाद न आये इस तरह रोजक शैली द्वारा ऐसा सरस प्रस्तुतिकरण करते कि उन्हें सुनने के लिए काफी लोग एकत्रित हो जाते।

प.पू. तरुलताबाई महासतीजी ने बम्बई युनिवर्सिटी से पीएच.डी. की पदवी प्राप्त की। इसके लिए उन्होंने अध्ययन के विषय के रूप में राजचन्द्र, आनन्दधनजी, बनारसी दास, एवं संत कबीर जैसे महान तत्ववेत्ताओं को पसन्द किया। इससे उनकी रुचि का क्षेत्र आध्यात्मिकता की कैसी ऊँची भूमिका पर रहा है, वह समझ में आ ाता है। इन चारों महात्माओं ने सम्प्रदाय एवं गच्छ कि परिधि से बाहर निकल कर शुद्ध परम तत्व की उपासना की थी। उनकी आध्यात्मिक अनुभूति उच्च कोटि की थी। उनका साहित्य गहन, मार्मिक एवं रसयुक्त है। प.पू. तरुलताबाई महासतीजी ने श्रीमद्राजचन्द्र के साहित्य का सधन अध्ययन किया है। इसलिए ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' पर व्याख्यान देने के लिए वे सर्वथाविशेष अधिकारिणी हैं।

श्रीमद् राजचन्द्रजी ने १९ वर्ष का अल्प आयु में ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' नामक मात्र १४२ गाथा की कृति की रचना की। विक्रम सम्वत १९५२ में आसोवद एकम की शाम, नडियाद में उन्होंने केवल डेढ़ दो घन्टे के अल्प समय में इसकी रचना की जो सिद्ध करता है कि उनकी विचार धारा कितनी स्पष्ट थी एवं शब्दों पर उनका प्रभुत्व कैसा असाधारण एवं अद्वितीय था। जहाँ जो शब्द चाहिए, वहाँ वह शब्द रखा। ऐसी असाधारण कवि प्रतिभा उनके पास थी। यह कृति इतनी सुरेख एवं संश्लिष्ट है कि, इतने वर्षों के बाद भी ''आत्मा सिद्धि शास्त्र'' शास्त्र का एक शब्द भी इधर-उधर करने का दिल नहीं होता।

श्रीमद्जीने आत्म सिद्धि शास्त्र में शुद्ध आत्मतत्व पर विशद् विचार किया है। श्रीमद् लिखते हैं —

आत्मा छे, ते नित्य छे, छे कर्ता निज कर्म;
छे भोक्ता वळी मोक्ष छे, मोक्ष उपाय सुधर्म।

श्रीमद् ने सरल वाणी द्वारा ऐसा सुन्दर प्रकाश प्रकाशित किया है कि, आत्मा के इन छः पदों पर भव्य जीवों को सद्बोध हो जाये। जिन्होंने आत्मार्थी एवं मतार्थी के लक्षणों को स्पष्ट किया है और आत्मार्थी